International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(I), April- June, 2026, pp. 93-96

सावित्री बाई फुलेः भारत में महिला शिक्षा की योद्धा

Seema Bai Chandaniya*

Research Scholar, Department of Education, Jyoti Vidyapeeth Women's University.

*Corresponding Author: seemabaichandaniya88@gmail.com

Citation: Chandaniya, S. (2026). सावित्री बाई फुलेः भारत में महिला शिक्षा की योद्धा. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(I)), 93–96.

सार

भारतीय समाज एक पेट्रियार्कल समाज है जहाँ महिलाओं को पुरुषों से कमतर माना जाता है और यह एक ऐसा समाज भी है जहाँ जाति व्यवस्था चलती है। NCRB की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल दलितों पर अत्याचार में 19.4: की बढ़ोतरी हो रही है। इक्विटी वॉचेस रिपोर्ट (2015) से भी पता चलता है कि दलितों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं और अगर दलित महिलाओं के डेटा की बात करें तो यह सबसे खराब है। यह आजाद और डेमोक्रेटिक भारत का डेटा है। इसलिए, उस समय दलित महिलाओं की स्थिति का आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है जब भारत आजाद नहीं था। लेकिन, सावित्री बाई फुले, जो निचली जाति से थीं, न केवल निचले वर्ग की महिलाओं के लिए बल्कि समाज की सभी महिलाओं के लिए मील का पत्थर साबित हुईं। वह एक समाज सुधारक और शिक्षिका के रूप में मशहूर हुईं। यह समझा जा सकता है कि सावित्री बाई फुले ने कितने मुश्किल हालात, अत्याचार और भेदभाव झेले होंगे। यह पेपर मिसेज फुले के जीवन, भारत में महिलाओं की शिक्षा में उनके योगदान, समाज सुधार की यात्रा में उनके सामने आई चुनौतियों और आज के समय में उनकी अहमियत पर फोकस करता है।

शब्दकोशः *मार्जिनलाइज़्ड सेक्शन, महिला एम्पावरमेंट, एजुकेशन, चौलेंज, पेट्रियार्की सोसाइटी।*

प्रस्तावना

सावित्री बाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव में हुआ था, लेकिन उन्होंने पूरे समाज के लिए एक मील का पत्थर साबित हुईं। एक छोटे से गाँव में पैदा होने के बावजूद, जहाँ पितृसत्ता और पारंपरिक रीति–रिवाजों का सामना करना पड़ा, उन्हें एक समाज सुधारक और शिक्षिका के तौर पर पहचाना गया। एक अहम हस्ती के तौर पर पहचाने जाने का उनका सफर आसान नहीं थाय यह बहुत मुश्किल था। उन्होंने जाति–आधारित जुल्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने महिला सशक्तिकरण और पिछड़े तबके के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने अपनी जिंदगी महिलाओं की शिक्षा के लिए लगा दी और इस तरह उन्हें पहली महिला टीचर के तौर पर याद किया जाता है। समाज सुधार की उनकी यात्रा में, उनके पति महात्मा ज्योतिबा फुले ने उनका पूरा साथ दिया। वह हमेशा सावित्री बाई फुले के शुरू किए गए सभी सामाजिक आंदोलनों में उनके साथ खड़े रहे। उन्हें कविता लिखने का भी शौक था और उन्होंने अपनी कविता का इस्तेमाल समाज को उन पुरानी

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

सोच के प्रति जागरूक करने के लिए किया जो महिलाओं और समाज के पिछड़े तबके के सशक्तिकरण में रुकावट बन रही थीं। वह एक महान कवि भी हैं। इस तरह, उन्हें आज भी 19वीं सदी के भारत में महिलाओं की शिक्षा और दबे–कुचले समुदायों की सामाजिक बेहतरी में उनके शुरुआती काम के लिए याद किया जाता है।

व्यक्तिगत जीवन और शिक्षा

उनका जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में नायगांव नाम के एक बहुत छोटे से गांव में लक्ष्मी और पाटिल के परिवार में हुआ था। वे माली समुदाय से थीं, जिसे निचली जाति का परिवार माना जाता था। यह समुदाय पारंपरिक रूप से बागवानी करता था। कठोर जाति व्यवस्था वाले समाज में पैदा होने के कारण उन्हें शिक्षा पाने और अपने व्यक्तिगत विकास में कई चुनौतियों और रुकावटों का सामना करना पड़ा। सावित्री बाई को शिक्षा और व्यक्तिगत विकास में कई रुकावटों का सामना करना पड़ा। उनके समय में, लड़कियों को आमतौर पर शिक्षा पाने की अनुमति नहीं थी और निचली जाति के परिवार में जन्म लेने से उनकी हालत और खराब हो जाती थी। 9 साल की बहुत कम उम्र में, उनकी शादी ज्योतिराव फुले से हुई, जिन्हें अब महात्मा ज्योतिबा फुले के नाम से जाना जाता है, जो एक प्रमुख समाज सुधारक थे। उन्होंने हमेशा पिछड़े तबके, खासकर महिलाओं और दलितों के अधिकारों की वकालत की। उन्होंने सावित्री को भी उनकी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया और महिलाओं और पिछड़े तबके के लिए उनके क्रांतिकारी काम में उनके गुरुध्साथी बने। उन्होंने सावित्री बाई के बौद्धिक और वैचारिक ढांचे को आकार देने में बहुत अहम भूमिका निभाई। शिक्षा और अपने पति से मिले विचारों के बारे में जानने की वजह से वह एक टीचर और समाज सुधारक बनीं। उनके पति के सपोर्ट ने उन्हें कई सामाजिक चुनौतियों और जाति के कड़े नियमों के बावजूद सीखने, पढ़ने और लिखने की प्रेरणा दी। महिलाओं और पिछड़े तबके के लिए समाज की पुरानी सोच को तोड़ने का उनका पक्का इरादा भारत में सामाजिक बदलाव के लिए एक जबरदस्त ताकत बन गया।

महिला शिक्षा में भूमिका और योगदान

भारत के लिए सावित्री बाई फुले का सबसे बड़ा योगदान महिलाओं की शिक्षा के लिए उनकी नई कोशिश थी। 19वीं सदी के बीच में जब समाज में पुरुषों का दबदबा था और महिलाओं को पढ़ाना बेकार और नुकसान पहुंचाने वाला माना जाता था, तब उन्होंने खुद पढ़ाई की और दूसरी महिलाओं को पढ़ाने के लिए आंदोलन शुरू किया। आम राय थी कि महिलाओं को सिर्फ घर के कामों में ही शामिल होना चाहिए और उन्हें अपने दिमागी विकास पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है। उनकी दिमागी ताकत को नजरअंदाज किया जाता था। ऐसे मुश्किल हालात में, सावित्री बाई ने अपने पति ज्योतिराव की मदद से साल 1848 में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला, ताकि इस तरह की पुरानी सोच और सोच को खारिजध्गलत साबित करने की उनकी कोशिशों की शुरुआत हो सके। लड़कियों के लिए स्कूल खोलने की उनकी कोशिशें अहम साबित हुईं और भारतीय शिक्षा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुईं क्योंकि इसने उन युवा लड़कियों को एक नया रास्ता और नजरिया दिया जो पढ़ाई के लिए फॉर्मल एक्सेस से वंचित थीं। अगले सालों में लड़कियों के लिए कई स्कूल खोले गए। सावित्री बाई और उनके पति लगातार महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में लगे रहे। वे इस विचार को बढ़ावा देने के लिए बिना थके काम कर रहे थे कि महिलाओं को भी पढ़ाई तक बराबर पहुंच मिलनी चाहिए। उन्होंने निचली जाति के बच्चों को शिक्षा देने पर भी ध्यान दिया, जिसका ऊँची जाति के लोगों ने कड़ा विरोध किया। उन्होंने उन्हें हतोत्साहित करने और हार मानने के लिए उन पर पत्थर, कीचड़ और यहाँ तक कि गोबर भी फेंका, लेकिन उन्होंने किसी बात की परवाह नहीं की। वह समाज द्वारा बनाई गई सभी मुश्किलों के खिलाफ लगातार खड़ी रहीं और निचली जाति की लड़कियों को शिक्षा देने की कोशिश की। अपने स्कूल के जरिए, उन्होंने न केवल पढ़ाई–लिखाई का ज्ञान दिया, बल्कि संवैधानिक मूल्यों और भावना (समानता, आत्म–सम्मान और सामाजिक न्याय के मूल्य) के बीज भी बोए। ऐसे स्कूल उन सामाजिक रुकावटों को खत्म करने में अहम बन गए जो महिलाओं को शिक्षा पाने से रोक रही थीं। लेकिन महिलाओं की शिक्षा के विचार को आगे बढ़ाने की अपनी यात्रा के दौरान, उन्हें समाज से भारी विरोध का सामना करना पड़ा, जो महिलाओं की

समानता के लिए पुरानी सोच रखते थे। उनके अनुसार, महिलाओं को शिक्षित करना गलत है और यह पारंपरिक सामाजिक ढाँचों में रुकावट के लिए जिम्मेदार होगा। लेकिन, सावित्री बाई डटी रहीं और बिना डरे उनका सामना करके उन्हें जवाब दिया। उन्होंने बहुत हिम्मत और लगन के साथ महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपना काम जारी रखा।

सामाजिक न्याय के लिए वकालत

सावित्री बाई को महिलाओं की शिक्षा के लिए उनके योगदान और बड़े प्रयासों के लिए पहली महिला टीचर के तौर पर याद किया जाता है, लेकिन उनके प्रयास सिर्फ महिलाओं की शिक्षा या उन्हें मजबूत बनाने तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि वह सामाजिक न्याय के लिए भी आवाज उठाती थीं। उन्होंने इस बात की वकालत की कि हर व्यक्ति को उसकी जाति और धर्म के बावजूद समान अधिकार मिलने चाहिए। उन्होंने जाति–आधारित भेदभाव से लड़ने के लिए भी बहुत मेहनत की। माली समुदाय में पैदा होने के कारण, जो निचली जाति थी, वह भारतीय समाज में दलितों और महिलाओं पर होने वाले अत्याचार को खास तौर पर समझती थीं। उन्होंने सार्वजनिक भाषणों और अपनी लेखनी के जरिए सामाजिक न्याय की वकालत की। अपने पति की मदद से, उन्होंने जाति व्यवस्था, बाल विवाह और दूसरी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आंदोलन शुरू किया और इस तरह समानता और न्याय पर आधारित समाज का एक विजन बनाया। इसके लिए, 1873 में उनके पति ने सत्यशोधक समाज (सत्य खोजने वालों का समाज) नाम का संगठन बनाया, जिसका मकसद सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना और जाति–आधारित भेदभाव को खत्म करना था। इसके अलावा, उन्होंने विधवाओं के अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी और विधवाओं की दोबारा शादी के लिए आवाज उठाई। उन्होंने बाल विवाह पर रोक लगाने के लिए काम किया। 19वीं सदी में महिलाओं की हालत बहुत खराब थी, लेकिन विधवाओं की हालत और भी खराब थी। उन्हें समाज से बहुत ज़्यादा अलग–थलग किया जाता था। इसलिए, विधवाओं की मुश्किलों को कम करने के लिए सावित्री बाई की कोशिशें बहुत बड़ी थीं, जिससे बाद में समाज सुधारकों ने विधवाओं और आम तौर पर महिलाओं की हालत सुधारने के लिए सुधार आंदोलन शुरू किए।

साहित्य में योगदान

महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक न्याय में उनके योगदान के अलावा, वह एक अच्छी कवि और लेखिका भी थीं। उन्होंने सामाजिक सुधारों की वकालत करने के लिए अपनी साहित्यिक प्रतिभा का इस्तेमाल किया। अपनी रचनाओं और कविताओं में, उन्होंने जाति व्यवस्था की बुरी प्रथा पर टिप्पणी की और हाशिए पर पड़े वर्गों, खासकर महिलाओं और दलितों के सामाजिक न्याय और अधिकारों के विचार को बढ़ावा दिया। मराठी में लिखी गई उनकी मशहूर कविता, "गो, गेट एजुकेशन" ("शिक्षानाचा पाठ"), खासकर महिलाओं और दलित समुदाय से जुड़े सामाजिक नियमों की सीधी आलोचना थी। उनकी कविता महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने और शिक्षा पाने के अपने अधिकार पाने के लिए एक बड़ी प्रेरणा और प्रोत्साहन भी थी। उनकी कविता समाज में महिलाओं को समाज द्वारा लगाई गई सीमाओं से आजाद होने के लिए प्रेरित करती थी। सामाजिक सुधार, खासकर महिलाओं और निचली जाति के लोगों के बारे में बातचीत को आकार देने के लिए उनकी रचनाएँ और कविताएँ बहुत जरूरी थीं।

वर्तमान संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता

सावित्री बाई फुले की विरासत उनके जीवनकाल से कहीं आगे तक फैली हुई है। खासकर महिलाओं और निचली जाति के लोगों के लिए सामाजिक सुधार में उनके प्रयासों और योगदान का भारतीय समाज पर लंबे समय तक असर पड़ा है। उनके प्रयासों ने बाद के सामाजिक सुधार आंदोलनों की नींव रखी। वह बाद के सुधारकों के लिए प्रेरणा बनीं और उन्होंने हाशिए पर पड़े वर्ग की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए पूरी तरह से काम किया और अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनकी विरासत को बाद के सुधारकों जैसे एनी बेसेंट, फातिमा शेख, सिस्टर निवेदिता आदि ने आगे बढ़ाया। भारत में महिलाओं की शिक्षा के विकास पर उनका गहरा और

स्थायी प्रभाव पड़ा। आज, भारत में महिलाओं में साक्षरता दर 19वीं सदी की तुलना में काफी ज़्यादा है। उनकी उपलब्धि और योगदान को चिह्नित करने के लिए, केंद्र सरकार उनकी जयंती को राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाती है। भारत भर में कई स्कूल, कॉलेज और संस्थान उनके नाम पर हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें सामाजिक न्याय की एक अग्रणी और चौंपियन के रूप में याद रखें।

निष्कर्ष

सावित्री बाई फुले की जिंदगी शिक्षा की बदलाव लाने की क्षमता की एक मजबूत याद दिलाती है, और बराबरी और न्याय के लिए उनका पक्का वादा आज भी भारत और दूसरे देशों में सामाजिक न्याय और महिलाओं के अधिकारों की मौजूदा लड़ाइयों में महसूस किया जाता है। सावित्री बाई फुले ने अपनी बहादुरी और लगन से खुद को समाज में बदलाव लाने वाली एक सच्ची हस्ती के तौर पर स्थापित किया। तारीफ के काबिल होने के साथ–साथ, शिक्षा में उनका योगदान क्रांतिकारी है। शिक्षा में उनके योगदान ने मौजूदा, बराबरी वाले एजुकेशन सिस्टम पर बहुत असर डाला है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भाई बी (2017).'पितृसत्ता और जाति का मुकाबलाः सावित्री बाई फुले पर एक केस स्टडी', अन्वेषणा का क्षेत्रीय अध्ययन, कानून, सामाजिक विज्ञान, पत्रकारिता और प्रबंधन प्रथाओं में अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल 2(5)149–154
2. बेरा एम 'सावित्री बाई फुले एक भारतीय अग्रणी । महिला शिक्षा' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नोवल रिसर्च एंड डेवलपमेंट 9(2) https://www-ijnrd-org/papers/IJNRD24023 11-pdf पर उपलब्ध है
3. एम काटके (2019). भारतीय सामाजिक तत्वों के प्रति सावित्रीबाई फुले का योगदान – एक अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नोवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट 9(2) https://www-ijnrd-org/papers/IJNRD2402311-pdf ij miyC/k gS d115-119
4. सरकार डी. सावित्रीबाई फुलेः समाज सुधारक का योगदान इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट 8 (3) 833 – 835 https://www-ijtsrd-com/papers/ijtsrd64977-pdf पर उपलब्ध है
5. हरिहर भेसेरा, मनिषा कुमारी, निहारिका बुरा गोहेन. (2024). भारत में लड़कियों की शिक्षा में सावित्रीबाई फुले का शैक्षिक योगदानः एक समकालीन चर्चा. यूएस–चीन एजुकेशन रिव्यू ए, नवंबर 2024, वॉल्यूम. 14, नंबर 11, 773 – 777 https://www-davidpublisher-com/indeÛ-php/Hom e/Article/indeÛ\id=51589-html पर उपलब्ध है
6. मोंडल ए (2023)। दलित शिक्षा के विशेष संदर्भ के साथ सावित्रीभाई फुले का शिक्षा में योगदान इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च 3 (8)3–8
7. मलिक–गौरे, ए. (2016)। औपनिवेशिक भारत में नारीवादी दार्शनिक विचार। आईआरए–इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज, 4(3), 579–589
8. https://ijrpr.com/uploads/V5ISSUE6/IJRPR2988 8-pdf
9. https://vajiramandravi.com/quest&upsc&notes/ social&reformers/
10. https://www.davidpublisher.com/index.php/Hom e/Article/index?id=51589.html.

❑❑❑